मास्टर सी० वी० वी०

योगी जन अनेक है। कई महान लोग हैं, कई मास्टर्स हैं। सबको प्रणाम, मास्टर सी० वी० वी० को प्रणाम। उन्होंने स्वयं मास्टर बन कर अन्य अनेक लोगों को भी मास्टर बनने के लिए प्रोत्साहित किया।

एक मास्टर क जीवन के बारे में पूरी जानकारी लेकर हमें यह समझना चाहिए कि उन्होंने कैसे दुनिया के लिए काम किया और उनसे शिक्षा लेनी चाहिए। मगर सभी अंगों को हमें भुला देना है, छोड़ देना है, 'मास्टर सी० वी० वी० नमस्कार इस मंत्र का भी। उपासना कभी भी हमारा रास्ता नहीं होगा, हमें तो विपस्सना को अपनाना है। साँस पर ध्यान रखना है, तभी हम गुरु और मास्टर हो सकते है।